P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XII*August-2015

भूमण्डलीकरण के दौर की चुनौतियाँ और हिन्दी की भाषिक व सांस्कृतिक अस्मिता

सियाराम मीणा
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सांगोद, कोटा, राजस्थान

सारांश

किसी भी दे"ा की सांस्कृतिक चेतना और परम्परा की जीवन्तता और निरंतरता में उसकी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाज के पारस्परिक बोल–चाल, आचार–विचार, संस्कार, जीवन दृष्टि, क्रिया–कलाप सब कुछ भाषा में ही स्थान पाते हैं और उसी के माध्यम से रूप–स्वरूप ग्रहण कर प्रवाहमान होते हैं तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होते हैं। इस दृष्टि से समाज और संस्कृति के संदर्भ में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की एकता और अखण्डता तथा उसकी सांस्कृतिक चेतना और अस्मिता को जीवंत और संरक्षित रखती है।

लेकिन आज बाजारवाद, आधुनिकता, पा"चात्य प्रभाव, उत्तर आधुनिकता, वै"वीकरण, भूमण्डलीकरण के समग्र प्रभाव ने न केवल हमारी संस्कृति के प्रति बल्कि हमारी भाषिक अस्मिता पर भी कई प्रभाव छोड़े है; जिन पर समय रहते विचार किया जाना आव"यक है। यह दौर कई तरह के छद्म आक्रमणों और वै"वक पूँजीवादी साम्राज्यवाद का समय है, जहां बाजार केवल औपनिवे"ाक सत्ता के केन्द्र बन गये हैं। आज सारा वि"व केवल एक ग्राम में ही नहीं अपितु एक बाजार में तब्दील हो गया है। वि"व के समृद्ध सत्ता केन्द्रों द्वारा कई प्रकार के 'ाड़यत्रों का जाल बुना जा रहा है। नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य ध्वस्त होते जा रहे हैं। आदमी वेब दुनिया का वा"िंदा हो गया है। भाषिक तथा सांस्कृतिक अस्मिताएं खतरे में हैं। आज उनके संरक्षण की आव"यकता है। भाषाओं के मूल उत्स– लोक भाषा, बोली, उपबोली, परम्परायें मृत प्रायः होते जा रहे हैं। इतना होते हुए भी हिन्दी अपनी मूल पहचान को रखकर वि"व बाजार में आगे बढ़ रही है।

हिन्दी को लेकर यद्यपि इस तरह की आशंका व्यक्त की जाती रही है कि वि"व बाजार और भूमण्डलीकरण के कारण हिन्दी का मूल संसार शायद और सिमटेगा, परन्तु आँकड़ों और अब तक हुए बदलावों को देखकर ऐसा नही लगता कि हिन्दी बाजार से बेदखल होगी। नि"चय ही इस दौर में बाजार पूरी तरह हिन्दी की गिरफ्त में है। वै"वीकरण में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से हिन्दी की भूमिका बढ़ी है। इसमें तो स"ाय नही है कि हिन्दी ने बाजार के अनुकूल अपने को ढाला है या विकसित किया है लेकिन इस दौड़ में उसका सांस्कृतिक स्वरूप कमजोर ही नही अपितु उसके सांस्कृतिक तत्व भी लुप्त हो रहे हैं जिसमें आधुनिकता और बाजारवादी सांस्कृतिक का ही योग है। आज हिन्दी में संस्कार और सम्मान सूचक हमारे परम्परागत शब्द गायब हो रहे हैं। आंचलिक बोलियाँ और उपबोलियाँ दम तोड़ रही है। लोक जीवन, लोक संस्कृति, बोलियों, उपबोलियों के संरक्षण व विकास तथा हिन्दी से उनका तादात्म्य कायम कराना आव"यक है। वैसे भी भारत में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित है जिनका हिन्दी से उचित संयोजन और संरक्षण आव"यक है।

मुख्य शब्द : भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, 'मातृभाषा, परंपरा, संस्कृति, भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, वै"वीकरण, पूजीवाद, उदारीकरण, निजीकरण।

प्रस्तावना

किसी भी दे"ा की सांस्कृतिक चेतना और परम्परा की जोवंतता और निरंतरता में उसकी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाज के पारस्परिक बोल–चाल, आचार–विचार, संस्कार, जीवन दृष्टि, क्रिया–कलाप सब कुछ भाषा में ही स्थान पाते हैं और उसी के माध्यम से रूप–स्वरूप ग्रहण कर प्रवाहमान होते हैं तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होते हैं। इस दृष्टि से समाज और संस्कृति के संदर्भ में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय संस्कृति के लिए राष्ट्रभाषा का होना आव"यक है। जब किसी दूसरी संस्कृति का प्रभाव हमारी संस्कृति पर पड़ता है, तो सबसे पहले भाषा ही

उसके प्रभाव में आती है। वस्तुतः भाषा संस्कृति का दर्पण होती है। इसमें संस्कृति जीवन्त रूप से प्रतिबिंबित होती है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र के विकास और समृद्धि की प्रतीक होती है। किसी भी दे"ा की भाषा का अध्ययन कर उस दे"ा की संस्कृति को जाना जा सकता है। भारतेन्दु हरि"चन्द्र ने राष्ट्रभाषा व मातृभाषा या कहें कि स्वभा'ाा को समस्त उन्नतियों का मूल माना है। 'मातृभाषा के प्रति' कविता में उन्होंने लिखा है कि ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।। विविध कला f"ाक्षा अमित, ज्ञान अनेक पकार। सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।''

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। वह हमारी सांस्कृतिक छवि का प्रतिनिधित्व करती है। हिन्दी भाषा ने हमारे दे"ा की सभी क्षेत्रीय भाषाओं से रस ग्रहण कर अपने रूप–स्वरूप का निर्माण किया है। इसलिए इसमें भारत की सांस्कृतिक छवि की समग्रता के द"ान होते हैं। यह दे"ा की एकता और अखण्डता की सूत्रधार है। महात्मा गांधी ने कहा था कि ''हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है। दे"ा का कोई भी सच्चा प्रेमी हिन्दी का तिरस्कार नही कर सकता।''[1] फादर कामिल बुल्के का मानना है कि ''दुनिया भर में शायद ही ऐसी विकसित, साहित्यिक भाषा हो जो सरलता में और अभिव्यक्ति की क्षमता में हिन्दी की बराबरी कर सके।''[2] हिन्दी सम्पर्क भाषा होने के कारण राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त कर सकी है। एल. सुनिता राय ने लिखा है कि ''सम्पर्क भाषा वही है जो दे"ा के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क कायम रखे। हिन्दी अधिकां"ा भागों में अधिकतर लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है। वह सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के क्षेत्र में संपर्क रखती आई है।''[3] भारत की एकता और अखण्डता के लिए हिन्दी की प्रगति और व्यवहार अति आव"यक है। लेकिन सवाल यहाँ भाषा के राष्ट्रीय सांस्कृतिक स्वरूप एवं वैf"वक स्तर पर प्रतिद्वंद्विता हेतु विकास, दोनों के बीच संतुलन की चुनौती का है। उसे अंतर्राष्ट्रीय पटल पर आगे बढ़ना है; साथ ही उसके स्वरूप में राष्ट्रीय अस्मिता को भी अक्षुण बनाय रखना है। मनोज पाण्डेय ने लिखा है कि ''वै"वीकरण के परिणाम स्वरूप दुनिया की तमाम भाषाओं की भांति हिन्दी के स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया है, प्रसार में वृद्धि हुई है। हिन्दी न सिर्फ भारतीय मण्डल अपितु समूचे भूमण्डल की प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है। यह हकीकत है कि नब्बे के द"ाक में वि"व बाजार व्यवस्था के तहत बहुप्रचारित उदारीकरण, निजीकरण, भूमण्डलीकरण की प्रकृति से भारत अछुता नहीं रह सकता था। देर–सबेर उसे भी वैf"वक मण्डी में खड़ा होना ही था।.....वै"वीकरण की मूल अवधारणा अर्थकेन्द्रित है। अर्थोन्मुखी होने के कारण ही वै"वीकरण का समूचा प्रासाद, चाहे भाषा को लेकर हो या विचार को, संस्कृति को लेकर हो या तकनीक को, उपभोक्तावादी ही है।''[4] और उपभोक्तावदी संस्कृति में परम्परागत मानवीय मूल्यों, नैतिक मानदण्डों व सांस्कृतिक तत्वों का संरक्षण चुनौतोपूर्ण कार्य है। इसमें कोई सं"ाय नही है कि हिन्दी वि"व बाजार में अपनी पकड़ बजबूत बना रही है। ''हिन्दी को लेकर यद्यपि इस तरह की आ"ांकाएँ व्यक्त की जाती रही है कि वि"व बाजार और भूमण्डलीकरण के कारण हिन्दी का मूल संसार शायद और सिमटेगा, परन्तु आँकड़ा और अब तक हुए बदलावों को देखकर ऐसा नही लगता कि हिन्दी बाजार से बेदखल होगी। नि"चय ही इस दौर में बाजार पूरी तरह हिन्दी की गिरफ्त में है। ...वै"वीकरण में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से हिन्दी की भूमिका बढ़ी है।''[5] इसमें तो सं"ाय नही है कि हिन्दी ने बाजार क अनुकूल अपने को ढाला है या विकसित किया है लेकिन इस दौड़ में उसका सांस्कृतिक स्वरूप कमजोर ही नही उसके सांस्कृतिक तत्व भी लुप्त हो रहे हैं जिसमें आधुनिकता और बाजारवादी सस्कृति का ही योग है। आज हिन्दी में संस्कार और सम्मान सूचक हमारे परम्परागत शब्द गायब हा रहे हैं। आंचलिक बोलियाँ और उपबोलियाँ दम तोड़ रही है। लोक जीवन, लोक संस्कृति, बोलियों, उपबोलियों के संरक्षण व विकास तथा हिन्दी से उनका तादात्म्य कायम कराना आव"यक है। वैसे भी भारत में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित है जिनका हिन्दी से उचित संयोजन आव"यक है।

बाजारवाद, आधुनिकता, पा"चात्य प्रभाव, उत्तर आधुनिकता, वै"वीकरण, भूमण्डलीकरण के समग्र प्रभाव ने न केवल हमारी संस्कृति के प्रति बल्कि हमारी भाषिक अस्मिता पर भी कई प्रभाव छोड़े है; जिन पर समय रहते विचार किया जाना आव"यक है। यह दौर कई तरह के छद्म आक्रमणों और वैf"वक पूँजीवादी साम्राज्यवाद का समय है, जहां बाजार केवल औपनिवैf"ाक सत्ता के केन्द्र बन गये हैं। आज सारा वि"व केवल एक ग्राम में ही नहीं अपितु एक बाजार में तब्दील हो गया है तथा वि"व के सक्षम और समृद्ध सत्ता केन्द्रों द्वारा कई प्रकार के 'ाडयत्रों का जाल बुना जा रहा है। नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य ध्वस्त होते जा रहे हैं। आदमी वेब दुनिया का वाf"ांदा हो गया है। डॉ. बाबूराम के ये विचार निर्मूल नही हैं कि –''पf"चम के अंधानुकरण ने हमें हमारी मातृभाषा और हमारी धरोहर से दूर कर दिया है। पf"चम की हर चीज श्रेष्ठ है, की अवधारणा ने हमारा दिवाला निकाल दिया है.. पf"चम ने अपने भाषायी, आर्थिक और सांस्कृतिक हितों को ही महत्व दिया है और तीसरी दुनिया के दे"ाों को मातृ उपभोग्य, बाजार ही माना है। एक ग्लोबल भाषा, ग्लोबल संस्कृति, ग्लोबल बाजार के नाम पर विकास"ाील दे"ाों की भाषा, संस्कृति एवं बाजार पर जो हल्ला बोला है वह एक खतरनाक रूप लेता दिखाई पड़ रहा है।''[6]

दे"ा में हिन्दी के व्यापक प्रयोग को लेकर अंग्रेजी सबसे बड़ी समस्या है। हमारे समाज में अंग्रेजी को लेकर अंधानुकरण की प्रवृति लम्बे समय से बलवतो होती जा रही है। यह हमारी इच्छा शक्ति के कमजोर होने का प्रमाण है। हिन्दी के साथ यह दोहरा व्यवहार उसके विकास में बाधा उपस्थित करता है। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय गौरव की प्रतीक होती है। लेकिन लोगों में अंग्रेजीयत की प्रवृत्ति समाप्त नही हुई है। यह राष्ट्र के प्रति हमारी निष्ठा पर बहुत बड़ा प्र"न चिह्न है। दे"ा और दुनियां की अनेकों भाषाओं का ज्ञान बुरी बात नही है। पर राष्ट्र भाषा का तिरस्कार करके नही। अंग्रेजी को ज्ञान–विज्ञान एवं तकनीकि विषयों की भाषा के रूप में प्रचारित किया गया है, लेकिन यह सत्य नही है। रूस की सारी सामरिक

तकनीकि अंग्रेजी के बजाय रूसी में है। अंतरिक्ष विज्ञान में रूसी पुस्तकों के अध्ययन ज्ञान बिना अधूरा है, जापान की इलैक्ट्रोनिक अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी का कोई स्थान नही है। जर्मनी को आर्थिक महा"ाक्ति बनाने में उसकी अपनी भाषा जर्मन ने ही मदद की है। हमें भी सारा काम अपनी भाषा में करना चाहिए। हिन्दी कठिन भाषा नही है। यह स्वदे"ाी भाषा है। हमें हमारा सारा ि"ाक्षण, प्रि"ाक्षण व शोध कार्य स्वभाषा में करना चाहिए, तभी हम विकास मार्ग पर अग्रसर होते रहेंगे।''[7] विज्ञान और प्रौद्योगिकी के समस्त विषयों के उपलब्ध ज्ञान को हिन्दी में रूपान्तरिक करना चाहिए न कि उसके लिए अंग्रेजी या अन्य भाषा में अध्ययन की मजबूरी खड़ी करना चाहिए। प्रयोगात्मक माध्यम के रूप में हमें हिन्दी को महत्व देना ही होगा। मुं"ाी प्रेमचंद ने लिखा है कि ''जिस दे"ा का दिमाग विदे"ाी भाषा में सोचे आर लिखे, उस दे"ा को अगर संसार राष्ट्र नहीं समझता, तो क्या वह अन्याय करता है ? जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका राष्ट्र भी नहीं। दोनों में कारण और कार्य का संबंध है।''[8]

यह विडंबना ही कही जायेगी कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के प्रति, उसके उपयोग के प्रति शुरू से ही उदासीनता का वातावरण रहा है या यह मात्र औपचारिकता का विषय बन कर रह गया है। इसे गंभीर विषय नही माना गया। जिसका कारण यह है कि हमारा मध्यम वर्ग, उच्च वर्ग और राजनीतिक खेमा अंग्रेजी का मोह नही छोड़ पा रहा है। प्रेमचन्द ने लिखा है कि ''अब हमें यह विचार करना है कि राष्ट्रभाषा का प्रचार कैसे बढ़े। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारे नेताओं ने इस तरफ मुजरिमाना गफलत दिखाई है वे अभी तक इस भ्रम में पड़े हुए है कि यह कोई बहुत छोटा–मोटा विषय है, जो छोटे–मोटे आदमियों के करने का है....उन्होंने अभी तक इस काम का महत्व ही नही समझा, नही तो यह उनके प्रोग्राम की पहली पाँती में होता।''[9] आज तक यह समस्या लगभग कायम है, हम आज भी अंग्रेजी बोलना, सीखना और व्यवहार में लेना आधुनिकता और गौरव का प्रतीक मानते हैं। इससे हिन्दी का बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है।

भूमण्डलीकरण के नाम पर विस्तारित बाजारवाद ने हिन्दी की देवनागरी लिपि को प्रयोग परक वैज्ञानिकता का आधार दिया है तथा संस्कृत एवं हिन्दी को कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक सहज भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। यही कारण है कि आज भाषा के संचारगत स्वरूप, सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी अपने स्वरूप को सक्षम बना रही है। मोबाइल और इन्टरनेट जैसे प्रसिद्ध संचार माध्यमों में हिन्दी ने योग्यता सिद्ध कर दी है। आज का समय भाषाओं के डिजिटल स्वरूप का समय है; जो भाषा अपना डिजिटल कलेवर जितना सक्षम बनायेगी वह उतनी हो सक्षम, व्यापक और विस्तृत होगी। वि"व बाजार में उस भाषा का दबदबा होगा। हिन्दी इस दि"ाा में प्रगति कर रही है। दसवें वि"व हिन्दी सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित हो रही डिजिटल भाषाओं का जिक्र करते हुए वि"ोषज्ञों के हवाले से कहा कि आने वाले दिनों में डिजिटल दुनियां में अंग्रेजी, चीनी और हिन्दी आदि भाषाओं का दबदबा बढ़ने वाला है।''[10] लेकिन हिन्दी के इस रूप के विकास में उसका सांस्कृतिक स्वरूप क्या होगा, हमारी लोक भाषाओं, बोलियों और उपबोलियों के साथ उसका क्या रि"ता होगा हमें यह भी सोचना होगा। क्योंकि भाषा का सांस्कृतिक स्वरूप उसके लोक जीवन की संबद्धता में ही सुरक्षित रह सकता है।

दूसरी बात यह कि भूमण्डलीकरण के दौर ने बाजारवाद को हवा दी है। यहां हर चीज को बाजार के अनुकूल होने के लिए विव"ा किया जा रहा है। वि"व भाषाएं वै"वीकरण की इस प्रवृत्ति से ग्रस्त है। समाज में बढ़ती इस प्रवृत्ति के कारण आंचलिक भाषाओं तथा बोलियों व उपबोलियों के अस्तित्व पर संकट मण्डरा रहा है। आदिवासी क्षेत्र की भाषाएं आज मृत प्रायः होती जा रही है; जिसके चलते उनकी सांस्कृतिक छवि न कवल धुमिल हो रही है, अपितु अपनी पहचान भी खो रही है। दसवें वि"व हिन्दी सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संबोधित करते हुए कहा कि ''भाषा शास्त्रियों का मानना है कि 21 वीं सदी के अंत तक वि"व की छः हजार भाषाओं में से 90 प्रति"ात भाषाएं लुप्त हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम इस चेतावनी को नहीं समझें और अपनी भाषाओं के संरक्षण के प्रयास नही किये तो हमें ऐसा रोना पड़ेगा जैसे डायनासोर या कई अन्य जीव–जन्तु एवं पेड़–पोधों की प्रजातियों के लुप्त होने पर रोना पड़ रहा है।''[11] यह आ"ांका निर्मूल नही है। प्रख्यात हिन्दी कथाकार राके"ा कुमार सिंह द्वारा लिए गये साक्षात्कार में आदिवासी शोध–छात्र ने इस बात का खुलासा किया है। वे कहते हैं कि अभी अण्डमान में 'ओंगि' भाषा चलती है, उसको बोलने वाली आखिरी औरत का देहांत हो गया। अब 'बो' एक भाषा मर गयी, उस औरत के साथ। काई नही जानता उस भाषा को, तो यह है वै"वीकरण का एक बुरा पहलू। जहाँ आदिवासी भाषा संरक्षित करने का कोई उपाय नही हो रहा है। और अब अंग्रेजी इतनी ज्यादा हो गयी है, चूँकि रोजगार की भाषा है, तो हर कोई अंग्रेजी से जुड़ता जा रहा है और अपनी ही भाषाएँ भूलता जा रहा है।''[12]

सूचना प्रौद्योगिकी के वै"ि"वक स्वरूप के संदर्भ में हिन्दी के सामने अंग्रेजी की चुनौती कम नही है। यह युग वर्चस्व का है। नि"चय ही हिन्दी ने भूमण्डलीकरण के दौर में तकनीकि दृष्टि से हर क्षत्र में अपने आप को सक्षम और मजबूत बनाया है और इसको आव"यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। लेकिन ऐसी स्थिति में हिन्दी भाषा का बाजारी रूप उसे न केवल अपनी दे"ाज और स्थानीय रंगत वाले रूप से दूर कर सकता है अपितु प्रादे"िाक भाषाओं के स्वरूप को भी खतरा हो सकता है। कोई भी भाषा अपनी बोलियों से ही रस ग्रहण करती हुई ही विकास कर पाती है। ऐसी स्थिति में सोचना यह है कि हिन्दी को जहां एक तरफ वि"व संचार माध्यमों में अपनी पकड़ मजबूत करनी है; वही अपनी जमीन से जुड़े रहने के लिए भी तैयार रहना है। हमारा अंग्रेजी प्रेम हिन्दी के लिए भारी पड़ सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाषा परिचय–त्रैमासिक प्रका"ान, अक्टूबर–दिसंबर 2006, सं. शुचि शर्मा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग

ब्लॉक 8, ि"ाक्षा संकुल परिसर, जे.एल.एन.मार्ग जयपुर–302015, पृ.सं. 32
2. साहित्य अमृत– जुलाई 2007 (पुष्पिता अवस्थी का लेख 'हिन्दी : वि"व–संस्कृति की अभिव्यक्ति भाषा') पृ.सं. 52
3. गवेषणा–2011–(स्वर्ण जयंती वि"ोषांक–2011), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, पृ.सं. 111 http// kosh.khsindia/hindi/
4. गवेषणा–2011 (स्वर्ण जयंती वि"ोषांक–2011) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान पृ.सं. 105 http// kosh.khsindia/hindi/
5. गवेषणा–2011 (स्वर्ण जयंती वि"ोषांक–2011) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान पृ.सं. 105 http// kosh.khsindia/hindi/
6. दैनिक ट्रिब्यून – डॉ.बाबूराम का लेख 'वै"वीकरण के दौर में हिन्दी की द"ाा और दि"ाा पर चिन्तन'
7. भाषा परिचय– त्रैमासिक प्रका"ान, अक्टूबर–दिसंबर 2006, सं. शुचि शर्मा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग ब्लॉक 8, ि"ाक्षा संकुल परिसर, जे.एल.एन.मार्ग जयपुर–302015, पृ.सं. 34
8. कुछ विचार – प्रेमचन्द, लेख राष्ट्रभाषा हिन्दी और उनकी समस्याएँ पृ.सं.126
9. कुछ विचार – प्रेमचन्द, लेख राष्ट्रभाषा हिन्दी और उनकी समस्याएँ पृ.सं.126
10. पंजाब केसरी – दिनांक 11.09.2015
11. पंजाब केसरी –दिनांक 11.09.2015
12. साक्षात्कारों में आदिवासी – सम्पादक दुर्गाराव बाणावतु व भीम सिंह, प्रका"ाक, अलख प्रका"ान, जयपुर प्रथम संस्करण 2015, पृ.सं. 106